

भारत के राष्ट्रपति ने केवड़िया, गुजरात में 80वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन का शुभारंभ किया

...

“वाद को विवाद न बनने देने के लिए संवाद का माध्यम ही सबसे अच्छा माध्यम होता है” : भारत के राष्ट्रपति

.....

”लोकतन्त्र के मंदिर के अभिरक्षक होने के नाते पीठासीन अधिकारियों का यह दायित्व है कि वे विधानमंडलों में शिष्टाचार, गरिमा और शालीनता सुनिश्चित करें” : उप राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति

....

“हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं संविधान से ही अपनी शक्तियां प्राप्त करती हैं क्योंकि संविधान विधानमंडलों को जन भावनाओं के अनुरूप काम करने का आधार प्रदान करता है” : लोक सभा अध्यक्ष

.....

”गुजरातियों का भारत के लोकतन्त्र में अमूल्य योगदान रहा है जिस पर राज्य के लोगों को बहुत गर्व है” : गुजरात के मुख्य मंत्री

...

केवड़िया, 25 नवंबर 2020: भारत के राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविंद ने आज केवड़िया, गुजरात में 80वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन का शुभारंभ किया।

भारत के उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति, श्री एम वेंकैया नायडू; गुजरात के राज्यपाल, श्री आचार्य देवव्रत; लोकसभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला; गुजरात के मुख्यमंत्री, श्री विजय रुपाणी; केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री, श्री प्रहलादजोशी; केंद्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री, श्री अर्जुनराम मेघवाल; वरिष्ठ कांग्रेस नेता, श्री अधीर रंजन चौधरी और अन्य विशिष्टजन भी उद्घाटन समारोह में शामिल हुए।

सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए, भारत के राष्ट्रपति ने कहा कि पिछले कुछ दशकों में आम जन मानस की आशाओं, आकांक्षाओं और जागरूकता में लगातार बढ़ोत्तरी हुई है। इसलिए पूरे देश में विधानमंडलों की भूमिका व जिम्मेदारियां और भी बढ़ गई हैं। उन्होंने कहा कि जन-प्रतिनिधियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे,

लोकतंत्र के सिद्धांतों के प्रति सदैव निष्ठावान रहें। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतांत्रिक संस्थाओं और जन-प्रतिनिधियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती, जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की है।

श्री कोविन्द ने यह कहा कि देश की जनता, अपने नेताओं से, संसदीय परम्पराओं और मर्यादाओं के पालन की अपेक्षा करती है। इसलिए, कभी-कभी जब जन-प्रतिनिधियों द्वारा संसद या विधान सभा में, अमर्यादित भाषा का प्रयोग या अमर्यादित आचरण किया जाता है, तो जनता को बहुत पीड़ा होती है। इसलिए जन-कल्याण और देश के व्यापक हित में, जन प्रतिनिधियों को सामंजस्य और समन्वय का मार्ग अपनाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में, 'वाद' को 'विवाद' न बनने देने के लिए 'संवाद' का माध्यम ही, सबसे अच्छा माध्यम होता है।

यह विचार व्यक्त करते हुए कि संसदीय लोकतंत्र में, सत्ता पक्ष के साथ-साथ प्रतिपक्ष की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, राष्ट्रपति जी ने कहा कि इन दोनों में सामंजस्य, सहयोग एवं सार्थक विचार-विमर्श आवश्यक है। इस संबंध में पीठासीन अधिकारियों का यह दायित्व है कि वे, सदन में, जन-प्रतिनिधियों को स्वस्थ बहस के लिए, उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराएं और शिष्ट संवाद तथा चर्चा को प्रोत्साहित करें। उन्होंने यह भी कहा कि अपने निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि होने के नाते, पीठासीन अधिकारी की जवाबदेही, क्षेत्र की जनता के प्रति भी होती है। सदन के अध्यक्ष का आसन, उनकी गरिमा और दायित्व - दोनों का प्रतीक होता है, जहां बैठकर वह, पूरी निष्पक्षता और न्याय-भावना से कार्य करते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अध्यक्षीय पीठ - निष्पक्षता, समदर्शिता और न्यायप्रियता का आसन है और सभी पीठासीन अधिकारियों से अपेक्षा की जाती है कि उनका व्यवहार भी, इन्हीं आदर्शों से प्रेरित होना चाहिए।

उद्घाटन समारोह में विशिष्टजनों को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति, श्री एम वेंकैया नायडू ने इस बात पर जोर दिया कि राज्य के तीनों अंगों में से किसी एक का दर्जा दूसरे से अधिक नहीं है क्योंकि संविधान का दर्जा सबसे ऊपर है। इस संबंध में श्री नायडू ने ऐसे न्यायिक निर्णयों का उल्लेख किया जिन्हें न्यायपालिका के क्षेत्राधिकार से बाहर माना गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अपने-अपने क्षेत्र में रहकर ही कार्य करना चाहिए जिससे न केवल परस्पर सद्भाव बना रहेगा बल्कि देश की प्रगति भी सुनिश्चित होगी। इसके लिए परस्पर सम्मान और अपनी जिम्मेदारी को समझने की आवश्यकता है।

श्री नायडू ने इस बात पर जोर दिया कि विधानमंडलों के महत्व को देखते हुए पीठासीन अधिकारी संसदीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्र के मंदिर के अभिरक्षक होने के नाते पीठासीन अधिकारियों का यह दायित्व है कि वे विधानमंडलों में शिष्टाचार, गरिमा और शालीनता सुनिश्चित करें।

सदस्यों को संबोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला ने गुजरात की भूमि के प्रति आदर भाव व्यक्त करते हुए कहा कि यह राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी और भारत के लौह पुरुष, सरदार पटेल की जन्म स्थली है। उन्होंने यह भी कहा कि केवड़िया में स्टैचू ऑफ यूनिटी के पास आयोजित किए जा रहे 80वें अखिल

भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन से संसदीय संस्थाओं को सुदृढ़ करने में बहुत मदद मिलेगी। श्री बिरला ने यह भी कहा कि विश्व का सबसे बड़े लोकतंत्र होने के नाते विधिनिर्माताओं को अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए सतत प्रयास करने चाहिए।

श्री बिरला ने कहा कि जनप्रतिनिधि होने के नाते विधिनिर्माता लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को मुखरित करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं संविधान से अपनी शक्तियां प्राप्त करती हैं क्योंकि संविधान ही विधानमंडलों को जन भावनाओं के अनुरूप काम करने का आधार प्रदान करता है। श्री बिरला ने यह भी कहा कि विधायकों को संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए सदैव जनकल्याण के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। श्री बिरला ने सभी विधायकों से यह अपील की कि वे नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र के नवनिर्माण का संकल्प लें। छोटा प्रयास भी लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है। भारतीय लोकतंत्र की इस यात्रा में संस्थाओं में मतांतर हो सकता है परंतु संवैधानिक उपबंधों और लोकतांत्रिक प्रणाली की सीमाओं के भीतर रहकर प्रक्रियाओं में सुधार करके इसका समाधान भी निकाला जा सकता है।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री विजय रूपाणी ने कहा कि भारत में लोकतंत्र और देश के विकास में गुजरात हमेशा अग्रणी रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि गुजरातियों ने भारतीय लोकतंत्र में अमूल्य योगदान दिया है जिस पर राज्य के लोगों को बहुत गर्व है। उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जीवी मावलंकर से लेकर प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी तक पीढ़ी दर पीढ़ी अनेक नेताओं ने निस्वार्थ भाव से देश की सेवा की है। श्री रूपाणी ने इस बात का भी उल्लेख किया कि महात्मा गांधी और सरदार पटेल के नेतृत्व में भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरदार पटेल ने भारत की संप्रभुता और अखंडता को सुदृढ़ किया।

विशिष्टजनों को संबोधित करते हुए लोकसभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता, श्री अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल जिनकी प्रतिमा केवड़िया की इस पावन भूमि पर है, ने देश को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि गुजरात महात्मा गांधी की जन्मस्थली भी है जिनके विचारों से आज भी हमें प्रेरणा मिलती है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि डॉक्टर बी आर अंबेडकर ने राजनीतिक और सामाजिक समानता दोनों पहलुओं पर जोर दिया गया था जिसे हमारे संविधान में आत्मसात किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारा संविधान उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की अमूल्य भेंट है जिन्होंने दिन-रात एक करते हुए इस वृहद और शानदार दस्तावेज को तैयार किया। श्री चौधरी ने इस बात पर जोर दिया कि बहुलता हमारी संस्कृति की मुख्य विशेषता है जिसमें मतभिन्नता और असहमति का स्थान है। हमारे देश में तर्क-वितर्क की परंपरा रही है, इसलिए हमें सार्वजनिक जीवन में भी वाद-विवाद, वार्ता और असहमति को स्थान देना चाहिए।

इस सम्मेलन के आयोजन के लिए लोक सभा अध्यक्ष की सराहना करते हुए केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री, श्री प्रहलाद जोशी ने कहा कि आज भारत सशक्त और संयुक्त है क्योंकि सरदार पटेल ने हमें एकता के सूत्र में बांधा। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि संविधान दिवस मनाने की शुरुआत गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने की थी और आज उनके प्रेरणादायी नेतृत्व में एक राष्ट्रीय समारोह बन गया है। श्री

जोशी ने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही लोकतांत्रिक व्यवस्था रही है। उन्होंने प्राचीन भारत में मौजूद अनुभव मंत्रप का उल्लेख किया। विधानमंडलों में व्यवधान की प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पीठासीन अधिकारियों सहित सभी सदस्यों को इस प्रवृत्ति के बारे में आत्मविश्लेषण करना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि विधायी संस्थाओं में लोगों की आस्था बढ़े।

इससे पहले गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष, श्री राजेंद्र त्रिवेदी ने विशिष्ट जनों का स्वागत किया। उन्होंने विशिष्ट सभासदों को यह जानकारी दी कि गुजरात विधानसभा में 2020 में पहली बार सर्वोत्तम सांसद पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसके लिए उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इसकी प्रेरणा उन्हें श्री बिरला से मिली। श्री त्रिवेदी ने यह भी कहा कि गुजरात सरकार और विशेष रूप से मुख्यमंत्री, श्री विजय रुपाणी ने शीघ्र ही आवश्यक निर्देश दिए और दिशा निर्देश जारी किए। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी के प्रेरणादायी नेतृत्व में संविधान दिवस एक अखिल भारतीय समारोह बन गया है।